बी.ए. पार्ट I

हिन्दी रचना (हिन्दी)

डा. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज, आरा

02.06.20

पुष्प की अभिलाषा

प्रश्न : माखन लाल चतुर्वेदी द्वारा रचित कविता का भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : माखन लाल चतुर्वेदी हिन्दी-कविता के भीष्म-पितामह थे। उनकी कविता में मानव-प्रेम एवं राष्ट्रीयता की भावना एक साथ चलते हैं। उनके काव्य का मुख्य विषय था- राष्ट्र की सेवा करना और मनुष्यता का अलख जगाना। यही कारण है कि उनकी कविताओं में एक तरफ मनुष्य के दुख-दर्द को गहरी अभिव्यक्ति मिली है तो दूसरी तरफ राष्ट्र-प्रेम के प्रति समर्पित भावना। माखनलाल चतुर्वेदी जिस समय काव्य रचना कर रहे थे, उस समय देश में अंग्रेजों का शासन था। अंग्रेजी शासन में भारत की आत्मा कराह रही थी। देश-वासियों की चिंता एवं दुख-दर्द को देख उनका हृदय द्रवित हो उठा। तब काव्य के माध्यम से अंग्रेजी शासन के विरुद्ध देश-प्रेम की भावना से ओत-प्रोत रचनाओं का सृजन करने लगे। उनके भीतर देशभक्ति भावना कूट-कूट कर भरी हुयी थी। जिसकी एक झलक उनकी कविता 'पुष्प की अभिलाषा' में स्वतः प्रकट हुयी है।

'पुष्प की अभिलाषा' चतुर्वेदीजी द्वारा रचित कि एक ख्यात कविता है। इस कविता के माध्यम से उन्होंने देश-भक्ति की भावना को जगाने का काम किया है। यहाँ उनका अभिप्राय उस देश-प्रेम से है जिसमें मनुष्य क्या फूल और पत्तियाँ भी अपने देश की आजादी के लिए प्राण न्योछावर करने को तैयार हैं।

P.T.O

इस कविता में माखन लालजी पुष्प के माध्यम से कहना चाहते हैं कि अंग्रेजी राज्य में देश की जो विकट स्थिति है उसमें देश के जन-मन के प्राण व्याकुल हैं। भारत की जनता अंग्रेजों के गुलामी से छुटकारा पाना चाहती है। इसलिए देश के लिए वह सब कुछ होम करने के लिए सहर्ष तैयार है। यहाँ के पुष्प में भी यह प्रेम की भावना उत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत हुई है।

'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता में चतुर्वेदीजी ने स्वयं पुष्प के मुख से कहलवाया है कि - पुष्प नहीं चाहता है कि वह देवी-देवताओं के सिर पर चढ़ाया जाय और अपने भाग्य पर गर्व करे। पुष्प यही भी नहीं चाहता कि वह प्रेमियों के गले का हार बने और अपने सौभाग्य पर इठलाए। वह सुरबाला के गहनों में गूँथने के लिए भी तैयार नहीं है। पुष्प यह सब बिलकुल नहीं चाहता। बस, उसकी एक छोटी सी अभिलाषा है।

वह बनमाली से बस इतना कहता है — हे, बाग के माली, तुम बागीचे से तोड़कर मुझे उस पथ पर फेंक देना, जिस रास्ते से होकर हमारे वीर सैनिक इस देश की स्वतंत्रता के लिए अपना शीश भेंट चढ़ाने जाते हैं। इस प्रकार कवि ने एक पुष्प के माध्यम से देश-सेवा और देश-प्रेम की भावना को अनोखे रूप में प्रस्तुत किया है। इस कविता की सबसे बड़ी विशेषता वह देश-प्रेम की भावना है, जहाँ पुष्प भी देश की सेवा में बिछ जाना चाहता है। जहाँ उसके सैनिक मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों को उत्सर्ग करने जाते हैं। उनके छाले पड़े पाँवों को कष्ट न हो, उन पाँवों को फूल के कोमल पँखुड़ियों से आराम मिले और वे सहर्ष युद्ध में भाग लेने जाएँ। पुष्प की यह छोटी अभिलाषा हमारी करुणा के तारों के पोर-पोर को झंकृत कर देती है। यही इस कविता की सार्थकता भी है। □□

Scanned with CamScanner